egkRek xka/kh vUrjjk"Vªh; fganh fo'ofo|ky;] o/kkZ ¼egkjk"Vª½
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatama Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No.3 of 1997)
नैक (NAAC) द्वारा ‘A’ ग्रेड प्राप्त

bykgkckn dsanz esa fo□k'k O;k[;ku

lkfgR; vkSj i=dkfjrk esa vyxko vkt dk eq[; ladV gS % Hkkjr Hkkj}kt

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय इलाहाबाद केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में **^lkfgR; vkSj ehfM;k*** विषय पर हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार, पुस्तक–वार्ता के पूर्व संपादक एवं हंस के स्तंभकार श्री भारत भारद्वाज का विशेष व्याख्यान आयोजित हुआ। उन्होंने आज़ादी के पूर्व और उसके बाद की हिंदी पत्रकारिता और साहित्य के अन्तःसंबन्धों की बारीकी से पड़ताल की। भारतेन्दु हरिश्चन्द् की पत्रिकाओं के हवाले से उन्होंने कहा कि उस दौर के साहित्यकारों का ध्येय साहित्य रचना के साथ ही आज़ादी को हासिल करना भी था। समाज को तमाम जकड़बंदियों से मुक्त कराना उनका स्वप्न था। तब प्रत्येक साहित्यकार किसी न किसी पत्रिका का संपादक भी हुआ करता था। जेल, ज़ब्ती, जुर्माना शब्द उस समय संपादकों/पत्रकारों को भयभीत नहीं करते थे। उन्होंने चांद, सरस्वती, स्वदेश,सैनिक, आनन्द कादम्बिनी आदि अनेक पत्रिकाओं के उदाहरण देकर अपनी बात को पुष्ट किया।

व्याख्यान के दौरान मंच पर विशेष तौर पर उपस्थित वरिष्ठ कथाकार एवं विश्वविद्यालय के पूर्व आवासीय लेखक श्री दूधनाथ सिंह ने कहा कि पत्रकारिता का आरंभिक दौर आलोचनात्मक विवेक और देश प्रेम का दौर था। उस दौर के लगभग सभी साहित्यकार एवं संपादक अंग्रेजी राज और उसके दमन के खिलाफ थे। सभी साहित्यकारों ने

पत्रिकाएं निकाल कर अपने दौर के संकटों से पार पाने में सक्रिय योगदान दिया। अपने साहित्य, संस्कृति और विचारों को संस्थापित करना उस दौर का मुख्य ध्येय था। उसी दौर में तर्कणा शक्ति का विस्तार हुआ। आज बदलती परिस्थितियों में मीडिया के सरोकार और दृष्टि पूर्णतः बदल गई है। वरिष्ठ आलोचक एवं बहुवचन के पूर्व संपादक प्रो. राजेन्द्र कुमार ने कहा कि भाषा का संस्कार साहित्य और मीडिया का प्रमुख कार्य था। साहित्य मनुष्यता का विस्तार करता है। हमारी संवेदना को पुष्ट और समृद्ध करता है। आज मीडिया पूँजीपतियों के हाथ में है और साहित्य से उसका रिश्ता कमजोर हुआ है इसलिए वैकल्पिक पत्रकारिता और लघु पत्रिकाओं की जरूरत महसूस की जा रही है।

व्याख्यान के आरंभ में केंद्र के प्रभारी प्रोफेसर संतोष भदौरिया ने विषय की प्रस्तावना रखी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्रीप्रकाश मिश्र, फ़खरूल करीम, असरार गांधी, प्रवीण शेखर, सूर्यनारायण, नीलाभ राय, अंशुमान, विधु खरे दास, सालेहा ज़र्रीन, अनुपमा राय, सपना सिंह, सूर्या ई.वी. एवं तमाम विद्यार्थी उपस्थित रहे।

iLrfr

bykgkckn dsUnz

bykgkckn dsUnz
24@28&ljkstuh uk;Mw ekxZ] flfoy ykbUl] bykgkckn&211001] m-iz-] Hkkjr
Qksu& 0532&2420700] QSDl % 0532&2424442] eks- 8004926360 bZesy % mgahvalld@gmail.com osclkbV % hindivishwa.org